

(18) ट्रेड-रेशम कीटपालन

कक्षा-12

उद्देश्य-

- 1-रेशम कीटपालन औद्योगीकरण द्वारा देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करना।
- 2-रेशम उत्पादन बढ़ाना, बिक्री बढ़ाना तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना।
- 3-निर्धनों के लिये सम्पूर्ण वर्ष में निरन्तर आय का एक मात्र साधन।
- 4-कम से कम पूंजी लगाकर अधिकतम आय प्राप्ति का सुलभ साधन होना।
- 5-रेशम कीटपालन उद्योग में दक्षता प्राप्त कर भविष्य में जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनाना।
- 6-श्रम के प्रति आस्था उत्पन्न करने, आत्म-निर्भर बनाने एवं एक कुशल नागरिक निर्माण में सहायक होना।
- 7-उत्तम किस्म का रेशम उत्पादन कर विदेशी व्यापार में सहयोग तथा कुटीर उद्योगों में भारत की गरिमा बनाये रखने में सक्षम।
- 8-रेशम उत्पादन से सम्बन्धित रासायनिक पदार्थों, यंत्रों, उपकरणों तथा सेरी कल्चर का समुचित ज्ञान प्राप्त कर जीवन को उपयोगी बनाने में सहायक।

रोजगार के अवसर-

- 1-रेशम उद्योग इकाइयों में रोजगार मिलने की सम्भावना।
- 2-रेशम कीटपालन उद्योग में स्वरोजगार या अपना निजी व्यवसाय चलाना।
- 3-रेशम उत्पादन कर रेशम का वृहत् व्यापार कर सकता है, इसका होल-सेल या रिटेल सेल का कार्य कर सकता है।
- 4-विभिन्न प्रकार के रेशम उत्पादन, ग्रेडिंग, भण्डारण एवं बिक्री दुकान खोल सकता है।
- 5-रेशम की बनी वस्तुएं साड़ी इत्यादि का स्वतः निर्माण कर एक छोटा उद्योग चला सकता है।
- 6-रेशम कीटपालन उद्योग से सम्बन्धित यंत्रों, उपकरणों आदि का निर्माण एवं विक्रय उद्योग चला सकता है।

पाठ्यक्रम-

इस ट्रेड में तीन-तीन घन्टे के पांच प्रश्न-पत्र और प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। अंकों का विभाजन निम्नवत् रहेगा-

(क) सैद्धान्तिक-

	पूर्णांक		उत्तीर्णांक
प्रथम प्रश्न-पत्र	60	} 300	20
द्वितीय प्रश्न-पत्र	60		20
तृतीय प्रश्न-पत्र	60		20
चतुर्थ प्रश्न-पत्र	60		20
पंचम प्रश्न-पत्र	60		20
(ख) प्रयोगात्मक-		} 400	200
आन्तरिक परीक्षा	200		
वाह्य परीक्षा	200		

टीप-परीक्षार्थियों को प्रत्येक लिखित प्रश्न-पत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 20 तथा योग में 33 प्रतिशत अंक एवं प्रयोगात्मक परीक्षा में 50 प्रतिशत उत्तीर्णांक पाना आवश्यक है।

प्रथम प्रश्न-पत्र

(रेशम कीट के भोज्य पौधों की खेती)

कोविड-19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र-2021-22 में विद्यालयों में समय से पाठन-पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:-

(4) शहतूत की खेती का आर्थिक दृष्टि से अध्ययन एवं महत्व।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् हैं।

- (1) शहतूत की विभिन्न उन्नतिशील जातियों की जानकारी-उत्तर प्रदेश में होने वाली जातियों का नाम व ज्ञान। 20
- (2) शहतूत के पौधों के लिये नर्सरी तैयार करना, भूमि का चयन, सिंचाई, खाद आदि की व्यवस्था। 20
- (3) नर्सरी से पौधों का स्थानान्तरण-पौधों से पौधों की दूरी, भू-परिष्करण के प्रकार एवं पौध उत्पादन में महत्व। 20

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(रेशम कीट जैविकी, पालक एवं भोज्य पदार्थों का संरक्षण)

कोविड-19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र-2021-22 में विद्यालयों में समय से पाठन-पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:-

(6) जैसिड्स, (Jassids) घिप्स बिहारी, हेयरी कैटर पिलर।

(7) ग्रेसरी द्वारा क्षति, उसका अध्ययन एवं मूल्यांकन।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् हैं।

- (1) रेशम कीट के रोग व्याधियों की जानकारी, पहचान, रोक-थाम, रासायनिक पदार्थों का उपयोग रसायनों को तैयार करना एवं नियन्त्रण या उपचार। 10
- (2) कीटों की सेवा ब्रसिंग की विधियां, विभिन्न आयु वर्ग के कीटों का पालन-पोषण की विधि। 10
- (3) शहतूत के पौधों में लगने वाले विभिन्न रोगों की जानकारी, पहचान एवं रोकथाम तथा उपचार। 10
- (4) कवक नाशक, कीटनाशी रसायनों की जानकारी, प्रयोग हेतु उसकी तैयारी, विधियों की जानकारी एवं सावधानियों का ज्ञान। 10
- (5) शहतूत के रूप राट, रस्ट, लीफस्पाट, पाउडरी मिल्ड्यू, लक्षण एवं पहचान तथा उपचार। 10

- (6) दीमक, कटवर्म का अध्ययन, पहचान एवं रोक-थाम तथा रासायनिक नियन्त्रण।

10

तृतीय प्रश्न-पत्र

(रेशम कीट बीजोत्पादन प्रौद्योगिकी)

कोविड-19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र-2021-22 में विद्यालयों में समय से पाठन-पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:-

1-लैंगिक भेदों की जानकारी।

2-अम्लीय उपचार।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् हैं।

- | | |
|--|----|
| (1) कीट का निकालना, पेपरिंग का समय, द्वितीय पेपरिंग। | 20 |
| (2) कीट का परीक्षण-अण्डों को साफ करना, रोगाणु नाशकीय करना, अण्डों का सेना। | 20 |
| (3) बीजोत्पादन का श्रेणीकरण आर्थिक महत्व विपरण। | 20 |

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

(रेशम निकालना, परीक्षण एवं कतान)

कोविड-19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र-2021-22 में विद्यालयों में समय से पाठन-पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:-

(4) अनुपयुक्त रेशम धागा की उपयोगिता।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् हैं।

- | | |
|---|----|
| (1) सिल्कवेस्ट का एकत्रीकरण एवं सुरक्षित रखना, सिल्क का परीक्षण, उसकी कमी की जानकारी तथा उसकी क्षति का मूल्यांकन। | 20 |
| (2) प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की देख-रेख एवं रख-रखाव। | 20 |
| (3) अच्छे धागा की पहचान एवं गुण नियन्त्रण। | 20 |

पंचम प्रश्न-पत्र

(रेशम प्रबन्ध एवं प्रसार)

कोविड-19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र-2021-22 में विद्यालयों में समय से पाठन-पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी है:-

(3) रेशम विपणन-सिद्धान्त, मूल्यांकन, समस्यायें, रेगूलेड बाजार, गुण व अवगुण, मूल्यों का मानकीकरण।

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् हैं।

- | | |
|---|----|
| (1) फसल बीमा, सहायता हेतु विभिन्न योजनाओं का ज्ञान। | 20 |
| (2) रेशम उद्योग एवं सहकारिता। | 20 |
| (4) प्रसार—उद्देश्य, प्रसार की विधियां, प्रशिक्षण एवं निरीक्षण व्यक्तिगत, सामूहिक सम्पर्क, श्रव्य—दृश्य प्रदर्शन का प्रयोग, तकनीकी संगठनों की जानकारी, बाई प्रोडक्टस का प्रयोग। | 20 |

**प्रयोगात्मक परीक्षा का पाठ्यक्रम
(प्रायोगिकी)**

- (1) हानिकारक जीवाणुओं की पहचान, संकलन।
- (2) कीटों के पकड़ने के उपकरण।
- (3) कोकून की छंटाई।
- (4) कोकून का मूल्यांकन, अच्छे कोकुनों की पहचान।
- (5) कतान के लिये निर्धारित उपकरण, उसका रख-रखाव, प्रयोग।
- (6) आर्थिक संस्थानों की जानकारी।
- (7) संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी।
- (8) रेशम उत्पादन केन्द्रों की जानकारी।
- (9) विभिन्न कोकुनों के लक्षणों का ज्ञान।
- (10) रेशम का विपणन—समस्यायें एवं समाधान।

प्रयोगात्मक परीक्षा की रूपरेखा

समय—5 घण्टे

(क) प्रयोगात्मक परीक्षा—

(1) वाह्य परीक्षा—

परीक्षार्थियों को 3 प्रयोग दिये जायें—

प्रयोग संख्या 1 (दीर्घ प्रयोग)

प्रयोग संख्या 2 (लघु प्रयोग)

प्रयोग संख्या 3 (लघु प्रयोग)

(2) सतत् आन्तरिक मूल्यांकन—

(क) सत्रीय कार्य

(ख) कार्यस्थल पर प्रशिक्षण

नोट :—प्रयोगात्मक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 50 प्रतिशत अंक पाना आवश्यक है।